राज्य और भूमण्डलीकरण भाग-1

Dr. Vini Sharma

* भूमण्डलीकरण क्या है?

* भूमण्डलीकरण के प्रति दृष्टिकोण

* राज्य सम्प्रभुता पर प्रभाव

(1) नई विश्व अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ

(2) नए अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से चुनौतियाँ

(3) अन्तर्राष्ट्रीय कानून से चुनौतियाँ

प्र. 1 - भूमण्डलीकरण क्या है, इस के विभिन्न चरणों को बताएं?

प्र. 2 - भूमण्डलीकरण क्या है और इस के विभिन्न दृष्टिकोणों की व्याख्या क

प्र. 3 - भूमण्डलीकरण का राज्य संप्रभुता पर क्या प्रभाव पड़ा?

प्र. 4 - राज्य के आंतरिक कार्य पर भूमण्डलीकरण का क्या प्रभाव पड़ा?

भूमण्डलीकरण :- भूमण्डलीयकरण एक सतत प्रक्रिया हैं।

- जिसमें दुनिया के सभी देश आपस में जुड़ जाते हैं
- आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से
- सभी स्तरों पर वैश्विक संचार बढ़ता है
- पूरा विश्व एक ग्राम में बदल जाता है
- मुख्य रूप से आर्थिक संबंध बढ़ता है
- परंतु सभी क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ता है
- नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रभाव पड़े।

CyberLink

पहला चरण

भूमण्डलीकरण - पूँजीवादी विस्तार का रूप है / या लक्ष्य है

- यूरोप से शुरू हुआ, बाद में समूचे विश्व में फैला
- इसका कोई निश्चित काल नहीं है, जिससे इसके विकास को पहचाना जा सके।
- 16वीं शताब्दी में यूरोपीय पूँजीवाद का प्रथम चरण शुरू हुआ
- लेकिन इस का विस्तार और विकास 19वीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के बाद हुआ।
- यह देश निर्मित माल का उत्पादक बन गए

CyberLink PowerDirector

दूसरा चरण

- पश्चिम की शक्तियाँ विश्व को बांटकर उनके संसाधनों का दोहन कर रही थी
- और प्रथम विश्व युद्ध के समाप्त होने तक यह दोहन रूक गया
- और मुक्त व्यापार संरक्षणवाद विरोधी कदम उठाए गए।

* द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति से बहु राष्ट्रीय कम्पनियों के उद्भव से पूँजीवाद के महान विस्तार का एक जिसने उत्पादन तथा व्यापार का अन्तर्राष्ट्रीयकरण किया।

तीसरा चरण

- भूमण्डलीय शक्तियों के विजय का तीसरा चरण बर्लिन की दीवार के पतन तथा सोवियत संघ के विघट

तीसरा चरण

- भूमण्डलीय शक्तियों के विजय का तीसरा चरण बर्लिन की दीवार के पतन तथा सोवियत संघ के विघटन के स

- जिससे पूँजीवादी तथा समाजवादी शक्तियों के बीच शीतयुद्ध समाप्त हुआ जिसमें पूँजीवाद विजयी रहा इसके
के सभी भागों में रहने वालों के लिए भूमण्डलीकरण एक वास्तविकता बन गया।

भूमण्डलीकरण के प्रति दृष्टिकोण

* भूमण्डलीकरण की इस नई प्रक्रिया के स्वरूप और परिणाम तथा उसके प्रभाव के बारे में विद्वानों में मतभेद है

* भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया को समझने के लिए तीन (3) दृष्टिकोणों की पहचान की जा सकती है :-

(1) अति भूमण्डलीयवादी (के. ओहवी k. Ohmae)

(2) संदेहवादी

(3) परिवर्तनवादी

एक अन्य -

(4) नव मार्क्सवादी

(1) अति भूमण्डलीयवादी

विद्वान - के. ओहमी (k. Ohmae)

* परम्परागत राष्ट्र - राज्य भूमण्डलीय अर्थव्यवस्था में अस्वाभाविक और असंभव है।

* सीमा रहित अर्थव्यवस्था के लिए राष्ट्रीय सरकारों को कम करती है।

* मध्यवर्ती संस्थाएँ इस व्यवस्था में पिस जाती है

* इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय बाजार तथा बहुराष्ट्रीय निगम शक्तिशाली हो चुके हैं।

* इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय बाजार तथा बहुराष्ट्रीय निगम शक्तिशाली हो चुके हैं।

* व्यक्तिगत ताकतें विश्व को नियंत्रित करती है।

* राज्य की शक्ति कम हो रही है।

* अन्य ताकतों व्यक्ति / व्यापारिक का फैलाव हो रहा है।

- यह अब स्थानीय भी है और अन्तर्राष्ट्रीय भी।

- यह राज्य से अधिक महत्वपूर्ण है।

- राज्य अपनी सत्ता और वैधता खो चुका है।

* भूमण्डलीकरण ने परम्परागत राष्ट्र - राज्य का स्थान ले लिया है।

* आर्थिक शक्ति राजनीतिक शक्ति तथा सामाजिक शक्ति से ज्यादा ताकतवर है।

- जो राज्य भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में नहीं शामिल होते या जो समय के धारा के साथ मिलकर नहीं चलते वे हैं।

- इन का कहना है कि - कल्याण राज्य की नीतियाँ / प्रशासन के सामाजिक प्रतिमान / और लोकतांत्रिक प्रतिम
कोई उपयोग नहीं हैं।

- इन का कहना है कि - कल्याण राज्य की नीतियाँ / प्रशासन के सामाजिक प्रतिमान / और लोकतांत्रिक प्रतिमा
कोई उपयोग नहीं हैं।

- विश्व भर में एक नया अभिजात वर्ग या ज्ञान वर्ग का उदय हो रहा है।

* नया वर्ग भूमण्डलीकरण से मिलने वाले लाभों का फायदा उठा रहा है।

* विश्व में परिवर्तन हो रहा है / उपभोक्तावाद का सिद्धांत चल रहा है

CyberLink PowerDirector

2 संदेहवादी दृष्टिकोण

* इसका अति भूमण्डलीयवादी से तीव्र मतभेद हैं

* इन्हें शंकालु बताया जाता है

* यह कहते हैं - भूमण्डलीकरण एक मिथक है

* यह कहते हैं - भूमण्डलीकरण एक मिथक है

* यह कहते हैं कि कुछ विद्वान जो आर्थिक शक्ति को महत्व देते हैं वो राज्यों की राजनीतिक शक्ति को कम आँ कर रहे हैं।

- यह कहते हैं बाजार शासन नहीं करता बल्कि राज्य सभी आर्थिक कार्यकलापों का नियमन करता है।

* राज्यों के बीच सम्बंधों का निर्धारण करने के मामलों में अकेले अर्थशास्त्र नहीं बल्कि राजनीतिक अधिक महत्

* भूमण्डलीकरण पश्चिमी साम्राज्यवाद का चरण है।

- इसमें पश्चिमी राज्यों द्वारा विश्व व्यापार को तीव्र किया गया है तथा निवेश किया गया है और एकाधिकार स्थापि
है।

* संदेहवादी विचारधारा वाले विद्वानों का मत है कि विश्व अर्थव्यवस्था की पुनर्संरचना नहीं हुई है।

* अधिकांश व्यापार तथा निवेश उत्तर का पक्ष लेते हैं और दक्षिण को हाशिये पर कर देते हैं।

- परिणामस्वरूप दोनों क्षेत्रों में आसमानताएँ बढ़ती जा रही है
- और पुराना अन्तर्राष्ट्रीय विभाजन अपेक्षाकृत मजबूत होता जा रहा है।
- इन असमानताओ के कारण विश्व में - कट्टरवादिता बढ़ रही है।

* सांस्कृतिक सामंजस्यीकरण के बजाय हम पाते हैं कि स्थानीय पहचानों का पुनर्प्रादुर्भाव हो रहा है।

CyberLink PowerDirec

* सांस्कृतिक सामंजस्यीकरण के बजाय हम पाते हैं कि स्थानीय पहचानों का पुनर्प्रादुर्भाव हो रहा है।

* विश्व प्रशासन के स्थान पर केवल पश्चिमी प्रभुत्व चल रहा है जो भूमण्डलीकरण के लुभावने नारे के पीछे

3. परिवर्तनवादी

* यह एक संतुलित दृष्टिकोण है

* इनका विश्वास है :- भूमण्डलीयकरण दुनिया में परिवर्तन ला रहा है।

* वे आधुनिक समाजों तथा विश्व व्यवस्था के तीव्र समाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों को लाने वाले शक्ति के रूप मानते हैं।

- इस प्रकार की प्रणाली में अन्तर्राष्ट्रीय तथा देशी

बाह्य तथा आंतरिक

मामलों के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं रह गया।

* भूमण्डलीकरण को शक्तिशाली परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में माना जाता है।

* भूमण्डलीकरण विश्व व्यवस्था तथा समाज अर्थव्यवस्थाओं तथा प्रशासकीय संस्थाओं के व्यापक परिवर्तन उत्तरदायी हैं।

CyberLink

* भूमण्डलीकरण को शक्तिशाली परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में माना जाता है।

* भूमण्डलीकरण विश्व व्यवस्था तथा समाज अर्थव्यवस्थाओं तथा प्रशासकीय संस्थाओं के व्यापक परिवर्तन के उत्तरदायी हैं।

* निर्धारित आदर्श पद्धति सामने रखने की बजाय परिवर्तनवादी विचारधारा प्रकिया में के रूप में मानते हैं।

4. नव मार्क्सवादी

* नव मार्क्सवादियों द्वारा भूमण्डलीकरण की उत्पत्ति तथा स्वरूप के बारे में भिन्न प्रकार आलोचनात्मक दृष्टिक
किया।

* विकासशील विश्व के बारे में भिन्न प्रकार का दृष्टिकोण दिया जाता है।

* नव मार्क्सवादी भूमण्डलीकरण को साम्राज्यवाद का एक नया रूप बताते हैं।

- और विकसित पश्चिमी देश इसलिए इसका प्रयोग करते हैं ताकि वे अपनी अर्थव्यवस्थाओं को व्यवस्थित रख

by PowerDirector

* विकासशील विश्व के बारे में भिन्न प्रकार का दृष्टिकोण दिया जाता है।

* नव मार्क्सवादी भूमण्डलीकरण को साम्राज्यवाद का एक नया रूप बताते हैं।

- और विकसित पश्चिमी देश इसलिए इसका प्रयोग करते हैं ताकि वे अपनी अर्थव्यवस्थाओं को व्यवस्थित रख

उदाहरण :-1970 व 80 के दशकों में तेल संकट के समय भूमण्डलीकरण का प्रयोग।

* इस नीति से विकसित देशों को लाभ

* विकासशील देशों को हानि

* इस नीति से विकसित देशों को लाभ

* विकासशील देशों को हानि

*** विकासशील देशों पर दबाव :-***

- ताकि वह अपनी अर्थव्यवस्थाओं को खुला रखे।

- ऋण संकट

- व्यापार प्रतिबंधों को हटाना

- कल्याणवाद का ढांचा समाप्त

- क्षेत्रीय असमानताएँ

राज्य सम्प्रभुता पर प्रभाव

प्र. 3 राज्य की सम्प्रभुता पर भूमण्डलीकरण का क्या प्रभाव पड़ता है?

* अधिकतर विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि राष्ट्र - राज्य समाप्त नहीं हुआ है

- लेकिन 20वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में इसमें कमी आई है।

- राज्य अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में अब भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

- राज्य अपनी स्वायत्ता बनाए हुए हैं।

- कुछ राज्यों का ह्रास हुआ है कुछ का उत्थान हुआ है।

- इस का मतलब यह है कि राज्य का अंत नहीं हुआ है बल्कि इसकी शक्ति और सत्ता में परिवर्तन आया है।

डेविड हेल्ड

राष्ट्र - राज्य की संप्रभुता पर भूमण्डलीकरण का दुष्प्रभाव :-

(1) नई विश्व अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ

(2) नए अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से चुनौतियाँ

(3) अन्तर्राष्ट्रीय कानून से चुनौतियाँ

Next
भाग -2 में

(1) नई विश्व अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ